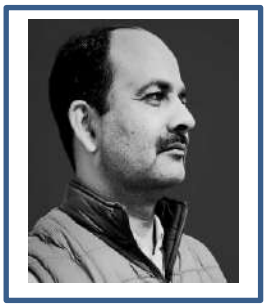

अवनीश त्रिपाठी

जन्मस्थान- गरएं, सुलतानपुर उ.प्र.
शिक्षा- एम.ए. (हिंदी)
प्रकाशन-दिन कटे हैं धूप चुनते,सिसक रहा उपसर्ग
सम्पादन-नई सदी के नए गीत,नवगीत नई चेतनाएँ
सम्मान- अनेक सम्मान एवं पुरस्कार
सम्प्रति- अध्यापन कार्य

अर्थ हुए पार्थ

शब्द सभी कृष्ण हुए
अर्थ हुए पार्थ।

टूटी इच्छाओं पर
साँसों की थाप,
तिरछे संवेदन पर
करुणा की चाप,

जाग रहे बुद्ध मगर
सोया सिद्धार्थ।

आस्था के बीच खड़े
निर्झर संवाद,
संयम के साथ बहा
मोह का निनाद,

तिर आये प्रश्नों के
कितने अन्वार्थ।

साँसों के कुम्भज का
मिथ्या प्रारूप,
स्वर व्यंजन फटक रहे
पाप-पुण्य सूप,

कपिलवस्तु गौण रहा
लुम्बिनी यथार्थ।

केवल रामजुहारी है

उम्मीदों की पगडंडी पर
केवल रामजुहारी है।

आश्वासन के बौने चेहरे
आरोपों के साये में,
शब्दों के राडार जुड़ गये
अपने और पराये में,

षड्यंत्रों की नकदी जारी
सुख की अभी उधारी है।

कर्तव्यों की आँखों में बस
भाषण वाले लश्कर हैं,
अधिकारों की चीख समेटे
चुप्पी के सब अक्षर हैं

वर्तमान में संघर्षों का
हर चाणक्य मदारी है।

सन्देहों के कैलेंडर पर
व्याकुल सब तारीखें हैं,
संवेदन का अक्खड़पन है
अर्थहीन सब चीखें हैं

फिर संयम का गला पकड़कर
बैठा समय जुआरी है।

ISSN:2583-8849